कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या.... 3179953

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words)

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 07-03-20

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 165/20..

Previous Pathshala

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जायें।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1 अ) वाजिद अली शाह के शासन काल में समाज विलासिता व्याप्त थी। समाज के सभी व्यक्ति विलासिता में डूबे हुए थे। राजकर्मचारी विषय-वासना, कवि प्रेम-विरह वर्णन मे, कारीगर चिकन बनाने, व्यवसायी अपने व्यवसाय मे लिप्त थे

ब) वाजिद अलीशाह के समय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आमोद-प्रमोद का प्राधान्य था जैसे शासन-विभाग मे साहित्य क्षेत्र, समाज मे, उद्योग धन्धों आहार व्यवहार आदि में विलासिता का आमोद-प्रमोद व्याप्त था।

2. (अ) काव्यांश के माध्यम से कवि ने मनुष्य को अपनी निद्रा से जागकर जीवन रूपी गति में चलने का संदेश दे रहा है कवि मनुष्य को सजग व निडर बनाना चाहता है।

(ब) कवि ने सूर्य, पवन तथा पंछी के उपमानों का प्रयोग करके मनुष्य को जगाने का भाव उत्पन्न किया है। कवि सूर्य की रोशनी, पवन की लहर तथा पक्षी की आवाज द्वारा जगाने का प्रयास कर रहा है।

3. अ) मानव समाज के लिए भाषा का विशेष महत्व होता है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणि है वह समाज में अपने भावों, मनोविचारों को एक-दूसरे के साथ संप्रेषित करना चाहता है इसके लिए भाषा की आवश्यकता होती है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ब) लिपि :- मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनियों को जिन संकेत चिह्नों के रूप में लिखा जाता है उसे लिपि कहते हैं। अर्थात ध्वनि का लिखित रूप लिपि कहलाता है।
⇒ देवनागरी लिपि में नेपाली, मराठी भाषा को लिखा जाता है।

4 (अ) यह ⇒ संकेतवाचक (सार्वनामिक) विशेषण, एकवचन पुल्लिंग, सपेरा की ओर संकेत को दर्शाता है

ब) उठा ⇒ क्रिया, अकर्मक क्रिया, एकवचन पुल्लिंग, भूतकाल तथा 'मैं' कर्ता की क्रिया है।

5 अभिधा शब्द शक्ति :-
जहाँ काव्य में मुख्यार्थ (अभिधेयार्थ) निकलता हो वहाँ अभिधा शब्द शक्ति होती है।

इसमें पाठक सीधा-सीधा अर्थ ग्रहण कर लेता है उसे किसी कल्पना का सहारा नहीं लेनी पड़ती है।
जैसे - चमेली का पुष्प श्वेत वर्ण का पुष्प है
वह सत्य बोल रहा है।
वह अपने लक्ष्य पर ध्यान दे रहा है

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

- उपर्युक्त वाक्यों में सीधा सीधा अर्थ ग्रहण हो रहा है अर्थग्रहण में को बाधा नहीं आ रही है।
चमेली का पुष्प है जिसका श्वेत रंग है यह स्वर है।

6 उपमा :- जहाँ काव्य में उपमेय मे उपमान की तुलना की जाए वहाँ उपमा अलंकार प्रयुक्त होता है
उपमा अलंकार वाचक शब्दो जैसे - सा, सरिस, सम सदृश, जिमि शब्दो का प्रयोग होता है।
जैसे :- पीपर पात सरिस मन डोला
काम-सा रूप है सोम सा शील है
राम महीप का ॥

रूपक :- जहाँ काव्य में उपमेय मे उपमान का भेद रहित आरोप किया जाए, वहाँ रूपक अलंकार प्रयुक्त होता है।
इसमें 'रूपी' वाचक शब्द प्रयुक्त होता है।
जैसे - अम्बर-पनघट मे डूबो रही
तारा-घट ऊषा-नागरी ॥

7. (i) Thesis - शोध प्रबन्ध

(ii) Vigilance - सतर्कता

BSER-165/2019

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

10

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक सृजन के काव्य खण्ड के सूरदास जी द्वारा रचित 'भ्रमर गीत' के चयनित पदों से लिया गया है। इसमें कवि गोपियों की विरह वेदना को उजागर कर रहा है।

व्याख्या :- कवि सूरदास के माध्यम से गोपियाँ उद्धव से कहती है कि हे उद्धव। श्रीकृष्ण के बिना यह कुंज भी हमारे शत्रु बन गये है। जब कृष्ण हमारे साथ थे तो ये लताएँ हमे शीतलता प्रदान करती थी जो अब कृष्ण के बिना आग की भयंकर ज्वाला के समान लग रही है। अब यह यमुना नदी भी व्यर्थ में बह रही है पक्षी व्यर्थ में बोल रहे है, कमल पुष्प तथा उनपर भौरें की गुँजन भी हमे प्रिय नहीं लग रही है। हवा, पानी बादल, कपूर, चंद्रमा सभी शीतलता प्रदान करने वाले है परन्तु कृष्ण के विरह में यह तेज सूर्य की किरणों के समान कष्टदायी लग रही है। हे उद्धव। हम आपसे प्रार्थना कर रही है कि आप कृष्ण को यह कह दे कि उनके विरह में हम सभी अपंग, घायल हो गयी है। कृष्ण का मार्ग देखते देखते यह आंखे दुःखी हो गई है।

विशेष :- (i) पद्यांश में ब्रज भाषा का माधुर्य है।
(ii) सूरदास ने गोपियों की विरह-वेदना को उजागर किया है।
(iii) अन्त्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
(iv) इसमे सूरदास की प्रेम-भक्ति भी उजागर हुई है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

11. प्रसंग:- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सृजन के 'गद्य खण्ड' के 'भय' नामक पाठ से लिया गया है इसके लेखक आचार्य रामचंद्र शुक्ल है जो भय नामक मनोविकार की उत्पति को बता रहे है।

व्याख्या:- लेखक वर्णन करते है कि जब कोई आपदा या दुःख आता है तो उसके कारक मनुष्य के मन में एक आवेग पूर्ण तथा स्तंभ कारी मनोविकार उत्पन्न होता है इस मनोविकार को भय कहते है। क्रोध तथा भय यह अन्तर होता है कि जब भय कारक या दुःखकारक का बोध होता है तभी उस पर क्रोध आता है भय व्यक्ति को बचने की प्रेरणा से अवगत कराता है। जब दुःख कारक का स्वरूप बोध हो जाता है तथा उस दुःख कारक ने यदि जानबूझकर दुःख पहुँचाया है तभी क्रोध उत्पन्न होता है। अर्थात क्रोध उत्पत्ति के लिए कारण का दिष्ट होना आवश्यक होता है।

विशेष:- (i) गद्यांश की भाषा सहज और सरल है।
(ii) मनुष्य के विभिन्न मनोविकारों में से 'भय' का वर्णन किया गया है।
(iii) भय तथा क्रोध में अन्तर स्पष्ट किया गया है।

12. वाक्यांश "बाजार से हठपूर्वक विमुखता उनमें नहीं" चूरन बेचने वाले भगत जी के लिए कहा गया है। भगत जी संयमी व्यक्ति है उनपर बाजार का जादू नहीं चल सकता है। भगत जी अपने मन को खुला रखकर बाजार जाते है वह हठपूर्वक अपनी इच्छा को नहीं दबाते है क्योंकि

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उन्हे बाजार से एक ही काम होता है। वह पसांरी की दुकान पर जीरा व नमक खरीदते है बाकी बाजार की चमक-दमक उनको प्रभावित नहीं करती है। वह बाजार आँखे खोलकर जाते है परन्तु बाजार रूपी शैतान का जाल उनपर प्रभाव नहीं डाल सकता है। इस वाक्यांश में भगत जी के संतोषी व संयमी स्वभाव का वर्णन है। भगत जी के मन बाजार की अन्य चीजों के प्रति आकर्षण शून्य रहता है। वह जोर-जबरदस्ती अपने मन को दबाकर बाजार नहीं जाते तो भी उनपर जादू काम नहीं कर पाता है।

13. 'आत्म परिचय' कविता अपनी अस्मिता तथा पहचान का बोध कराती है। कवि हरिवंशराय बच्चन' अपने आपको इस संसार से अलग बता रहे है। इसकी मूल संवेदना यह है कि कवि इस संसार मे प्रेम तत्व को फैलाना चाहता है परन्तु वह असफल रहता है। कवि बार बार ऐसे संसार की कल्पना करता है जो परस्पर प्रेम, सदभावना से युक्त हो कवि इस प्रेम तत्व के ससांर मे फैल जाने की आशा करता है कि एक दिन यह ससांर पूर्णता को प्राप्त करलेगा। कवि ने इस संसार को अपूर्ण बताया है इसमें प्रेम तत्व का अभाव है।

BSER-165/2019

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

यथा - यह अपूर्ण संसार भाता न मुझको---
कवि इस संसार को धन वैभव संचित करने वाला बताया है इसलिए इसे ठुकराता है। कवि अपने मन-मौजों पर मस्त रहता है कवि संसार को मस्ती का संदेश दे रहा है। परन्तु यहां प्रेम तत्व, सामाजिकता नहीं होने के कारण असफल रहता है। कवि दिवाने के रूप मे प्रस्तुत करता है ताकि संसार में खुशी व्याप्त करे कवि अपने कल्पना के पूर्ण संसार को देखना चाहता है

14 'मारिये आसा सांपनी जिन डसिया संसार' पंक्ति के माध्यम से कवि कबीरदास जी यह बताना चाहते है कि हमेशा दुराशा रूपी सर्पिणी को मार देना चाहिए जिसने अपने विष के प्रभाव से पूरे संसार को विष से ग्रस्त बना रखा है इसके लिए गुरु के मंत्र अर्थात संतोष की भावना से दुराशा को हटाया जा सकता है।

15 राजिया रा सोरठा' में कवि ने बुरे मित्र के बारे में बताया कि बुरा मित्र मुख पर विष दूध लगे उस घड़े के समान होता है जिसके अंदर विष भरा होता है। यह मित्र शत्रु से भी अधिक घातक होता है इस मित्र से हानि ही होती है।
तथा एक सच्चा मित्र अपने मित्र का कहा हुआ प्रत्येक काम करता है उसकी सहायता के लिए तत्पर रहता है। जिस प्रकार कृष्ण ने अर्जुन से मित्रता निभाई यह सच्ची मित्रता का उदाहरण है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

16. 'हाँ, इन सबकी आँखे किसी के आगे शब्द रहित संकल्प रहित मौन प्रार्थना मे खुली है।' यह पक्ति गड़रिये के परिवार के लिए प्रयुक्त की गई 'क्यों जब गड़रिये की भेड़ो को कोई बाधा पहुँचती है तो या भेड़ो के बीमार हो जाने पर शून्य आकाश की ओर खुली रहती है। गड़रिये का परिवार खुशी का अनुभव करता है जब इनकी भेड़ स्वस्थ हो जाती है। उनकी मौन प्रार्थना ईश्वर तत्काल सुनता है।

17. पर्वतीय क्षेत्रो की प्राकृतिक सुषमा अन्य क्षेत्रो से अधिक मनोहारिणी होती है। पर्वतीय क्षेत्रो लम्बी पर्वत शृंखलाए, कल कल करती नदियाँ वक्राकार आदि मार्ग तथा छोटी छोटी घास, विभिन्न प्रकार की फूलो की सुन्दरता दिखाई देती है उच्च पर्वतीय श्रेणी मे 'स्नोफॉल' शीतलता तथा शांति देती है। लम्बे तिरछे वृक्ष बर्फ घाटियाँ आदि स्थल दर्शनीय होते है पर्वतीय क्षेत्रो मे छोटे छोटे गाँव, दुकाने तथा डाकखाने मिलते है यहाँ से प्रकृति का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है सूर्योदय तथा सूर्यास्त मनोरम होते है। पर्यटको को यही आकर्षित करता है।

Previous Pathshala

अंक द्वारा दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18 कबीरदास -

कबीर दास जी निर्गुण भक्ति काव्य धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि माने जाते है।
कबीरदास जी का जन्म ई. सन् 1398 में हुआ
इनको कवि बाद में समाज सुधारक पहले माना जाता है। कवि
कबीर दास जी ने भेदभाव, बाह्य आडम्बरो व छुआ छुत का प्रबल विरोध किया।
कवि कबीर दास जी अपनी सपाटबयानी तथा तटस्थता से प्रसिद्ध हुए।
→ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन्हे वाणी का 'डिक्टेटर' कहा है।
कबीरदास जी के दोहे को 'साखी' कहा जाता है क्योंकि इन्होने जीवनानुभवो को साक्ष्य के रूप मे प्रकट किया है।
इनके वाणी का संकलन इनके शिष्य 'धर्मदास' ने किया।
इनकी रचना 'बीजक' मानी जाती है। बीजक के तीन भाग है साखी, सबद तथा रमैनी।
कबीर दास जी अपने शिष्यों को सदाचार व श्रेष्ठ जीवन मूल्य अपनाने की शिक्षा दी है।
कवि कबीर दास जी की मृत्यु सन् 1518 ई. मे हुई।

19. कवि रहिम ने सज्जन व्यक्ति के रूठ जाने पर उसे बार बार मना लेने की बात कह रहे है। क्योंकि सज्जन व्यक्ति से किसी व्यक्ति को

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बुरा नहीं होता है। सज्जन किसी व्यक्ति का भला ही करता है। उससे किसी भी प्रकार की कोई हानि नहीं होती है अतः सज्जन व्यक्ति को उसी प्रकार सौ बार रूठ जाने पर भी मना लेना चाहिए जिस प्रकार अमूल्य बहुमूल्य मोतियों का हार टूट जाने पर एक एक मनके को विसेयो पिरोया जाता है।

20. 'यहाँ कौन दुर्ग है। यही झोपड़ी न ; जो चाहे ले-ले उपर्युक्त वाक्य ममता ने बादशाह हुमायूँ से कहे है।

21. 'हट जा जीणे जोगिए हट जा करमाँ वालिए हट जा पुत्ताँ प्यारिए आदि वाक्य अमृतसर के बाजार के बम्बूकार्ट वाला कह रहा है। क्योंकि उसके मन में कोई द्वेष तथा ईर्ष्या नहीं है वह मार्ग में आने वाली वृद्ध औरत को प्रेम पूर्वक गाड़ी की टक्कर लगने से बचाने के लिए कह रहा है। यह वाक्य सौहार्द पूर्ण हो है

22. 'बलवान से भिड़न्त' पाठांश में हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अन्याय में दबे नहीं रहकर उसका विरोध करना

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

चाहिए। अन्याय को विरोध करके ही समाप्त किया जा सकता है। अन्याय पीड़ित को संगठित होने व मुकाबला करने का संदेश दे रहा तथा इसमें यह संदेश भी दिया गया है कि व्यक्ति से घृणा नहीं करनी चाहिए बल्कि उसके बुरे काम से घृणा करनी चाहिए

23 'मैं राम के लिए तड़पता हूं वह मेरे लिए' प्रस्तुत वाक्य में तुलसी दास एक तरफ तो प्रभु श्रीराम की भक्ति मे लीन होना चाहते हैं तो दूसरी ओर उनके मन में रत्नावली के प्रेम का मोह भी निहित है तुलसीदास जी बताते है कि शायद प्रभु मुझे इसी कारण दर्शन नहीं दे रहे हैं कि मैं रत्नावली को दुःखी कर रहा हूं। इस प्रकार उनकी स्थिति थाली में रखे बैंगन के लुढ़कने के समान है।

24 देवनारायण एवं महाराजा सूरजमल ने अपने जीवन को समाज व धर्म के लिए समर्पित कर दिया। देवनारायण बगड़ावत कुल में जन्मे नागवंशीय गुर्जर थे इन्होंने समाज को एक नई दिशा दी ये चिकित्सक तथा तंत्र शास्त्र के प्रकाण्ड-पंडित थे। उनकी अनेक चमत्कार जैसे जयसिंह की पुत्री पीपल दे को स्वस्थ करना सारंग सेठ को जीवित करना सूखी नदी से पानी निकालना आदि है। देवनारायण जी ने गोठ में अमन चैन स्थापित करने के लिए अत्याचारी दुर्जनशाल से युद्ध किया

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

देवनारायण जी गायों के संरक्षक थे इन्होंने समाज में मनुष्य को नीम व गोबर का महत्व स्पष्ट किया। इनके गुणों से लोगों को अवगत करवाया। इन्ही कारणों से आज इनकी पुजा नीम के पत्तों से की जाती है। इनके मंदिरों को 'देवरा' कहा जाता है। इन्होंने आडम्बरों का विरोध किया तथा इनको भगवान श्री विष्णु का अवतार माना जाता है।

महाराजा सूरजमल भरतपुर के राव बदन सिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। ये विशिष्ट गुणों तथा अन्य से बड़े होने के कारण युवराज बनाये गए। ये शारीरिक रूप से हृष्ट पुष्ट और तीक्ष्ण बुद्धि वाले थे। इन्होंने मेवात के दावर जंग को परास्त किया तथा नवाब (अलीगढ़) को भी परास्त किया। जब अहमद शाह अब्दाली भारत आया तो उसने दिल्ली पर अधिकार कर लिया तथा इन्होंने सलावत खाँ को सिंह झपट्टा मार कर मजबूर कर लिया तथा संधि की जिसकी शर्ते निम्न थी।

→ (i) मुगल सेना पीपल वृक्ष नही काटेगी।

→ (ii) मंदिरों तथा देवालयों को क्षति नही पहुंचाई जाएगी।

- इन्होंने अब्दाली को ऐसा पत्र लिखा जिसे पढ़कर उसकी हिम्मत डीग, कुम्हेर तथा भरतपुर जैसे राज्यों की ओर बढ़ने की नहीं हुई। इस प्रकार उन्होंने अपने प्रभाव से प्रभावित समूचे उत्तर भारत को कर रखा था।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

25 समाचार लेखन में इन्ट्रो :- यह समाचार का प्रारंभिक मुख्य सूचनात्मक भाग होता है इसमें प्रथम चार ककारों की जानकारी दी जाती है। इसे मुखड़ा भी कहते है। इन्ट्रो मुख्य सूचनात्मक भाग होने के कारण प्रभावी होना चाहिए।

इसका महत्व : इन्ट्रो का महत्व यह होता है कि यह सम्पूर्ण सूचना का सार होता है। संक्षिप्त मे पूरी सूचना होने से पाठक इसे पढ़कर सूचना ग्रहण कर लेता है।

26 फीचर लेखन :- फीचर लेखन का अर्थ होता है शब्दों द्वारा चित्रांकन करना।
किसी समाचार या सूचना को मनोरंजन परक शैली तथा कलात्मक रूप मे प्रस्तुत करना ही फीचर लेखन है। इसके निम्न प्रकार है।
(i) फोटो फीचर
(ii) व्याख्यात्मक फीचर
(iii) खेलकूद फीचर
(iv) व्यक्तिपरक फीचर।

27 साक्षात्कार :- साक्षात्कार अंग्रेजी शब्द 'इन्टर्व्यूह' से बना है जिसका अर्थ होता है अन्तर्मन की बात जानना।
साक्षात्कार उसे कहते है जो किसी के अन्तर्मन का साक्षात कराता है।
रैडमा हाउस के अनुसार " साक्षात्कार किसी व्यक्ति से सवाल जवाब के आधार पर समाचार पत्र प्रकाशक

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सूचना एकत्रित करता है ' साक्षात्कार कहलाता है
यह दो प्रकार का होता है
(i) नौकरीयों के लिए साक्षात्कार-(प्रतियोगी परीक्षा)
(ii) (इलेक्ट्रॉनिक) संचार माध्यमों के लिए साक्षात्कार ।)

28

रिपोर्ताज	यात्रा वृतान्त
(i) यह सूचना को कलात्मक व साहित्यिक ढंग से प्रस्तुत करने में कामयाब है।	(i) यात्रा वृतान्त एक अनुभव होता है जो यात्री विशेष पर आधारित होता है।
(ii) यह साहित्यिक तथा कलात्मक होता है।	(ii) यह विवरणात्मक शैली में होता है।
(iii) इसमें कल्पना का सहारा लेना पड़ता है	(iii) यह यात्रा का यथार्थ वर्णन होता है
(iv) यह एक अनुभव नहीं होता है	(iv) यात्रा वृतांत एक जीवनानुभव होता है।
(v) यह किसी घटना पर लिखा जा सकता है।	(v) यह केवल यात्रा का वर्णन होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

29 डायरी लेखन :- दैनिक जीवन में घटित होने वाली घटनाओं तथा अनुभवों को लिखना डायरी लेखन कहलाता है।
डायरी को हिन्दी में दैनन्दिनी कहते है।

डायरी लेखन का महत्व :-

- डायरी लेखन करने वालो अपने जीवन के साथ क्या घटित हुआ है यह ज्ञान कराती है।
- डायरी लेखन जीवन में परिवर्तन तथा व्यक्तित्व को सुधारने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- प्रारंभिक काल मे लिखी गई डायरी कालान्तर में व्यक्तित्व का बदलाव का परिचय करवाती है।
- डायरी जीवन के प्रत्येक अनुभवों को लेखक के सामने दृष्टिगोचर करवाती है।
- डायरी लेखक यह जान सकता है कि जीवन में उसने क्या खोया है क्या पाया है।
- जीवन को सुधारने, तथा व्यक्तित्व सुधारने पिछले दिनों के अनुभवों को व्यक्ति के सामने प्रकट करती है।
- व्यक्तिगत डायरी गोपनीय होती है जिसमे लेखक प्रत्येक अच्छे बुरे अनुभव को लिख सकता है।
-

BSER 16/5/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9 नारी सशक्तिकरण

प्रस्तावना:- नारी जाति आज समाज में पिछड़ी हुई है समाज में नारी जाति को सशक्त होने की आवश्यकता है। नारी समाज में पुरुषों के पत्नी के रूप में अर्द्धांगिनी बनकर जीवन जीती है। नारियो वर्तमान मान में नारी का सशक्तिकरण आवश्यक है क्योंकि शुरू से ही समाज में स्त्रियां पिछड़ी हुई है। उनके जीवन में एक दबाब पूर्ण जीवन होता है। नारी का सशक्तिकरण वर्तमान मे आवश्यक है क्योंकि एक सशक्त नारी ही समाज का उत्थान कर सकती है।

नारी सशक्तिकरण क्या है?:- नारियों को भी पुरुषों के समान समाज मे जीने के लिए सुविधा पूर्ण शक्तियाँ प्रदान करना नारी शक्ति करण कहलाता है। नारियों का एक साथ मिलकर खड़े होने की शक्ति नारियों को समाज द्वारा प्रदान करना नारी सशक्तिकरण कहलाता है। नारी शक्ति वर्तमान मे चरमोत्कर्ष पर है।

नारी सशक्तिकरण मे बाधा:- नारी सशक्तिकरण में पिछड़ा समाज एक प्रमुख बाधा है। अंधविश्वास भी इसमें प्रमुख योगदान देता है। समाज मे गरीबी तथा अशिक्षा भी इसके लिए मुख्य भूमिका निभा रहा है। वर्तमान मे सरकार के नारी सशक्तिकरण कमजोर प्रयास भी

BSER-165/2019

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

एक बाधा का काम कर रहे है। नारी के उत्थान में अशिक्षा महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। लोगों में स्त्री पुरुषों में लिंग भेद तथा पुरुष समाज की प्रधानता भी एक प्रमुख बाधा है। उनमे कुछ समाज के लोग अपने आपको नारियों से श्रेष्ठ बताने के लिए अनेक गलत प्रयास कर रहे है।

नारी सशक्तिकरण के सहायक तत्व :- नारी सशक्तिकरण का प्रमुख सहायक तत्व पुरुष प्रधान समाज की पराजय होना है। पुरुष यदि ये स्वीकार कर ले तो यह बिना विरोध पूर्वक सशक्त हो जाएगी वर्तमान में सरकार ने भी समाज के उत्थान मे अपने अथक प्रयास कर रही है।

नारी सशक्तिकरण के लाभ :- क्योंकि एक सशक्त नारी ही समाज में जीवन जी पाती है। उसके जीवन मे कोई बाधा नही आ पाती है। सशक्त नारी अपने बच्चों को पूर्ण रूप से शिक्षित करने का काम कर सकती है। समाज मे उत्थान होगा इस प्रकार सशक्त नारी निर्बला व अबला न रहकर सबल बन जाएगी।

उपसंहार :- इस प्रकार सशक्त नारी अपनी समाज का उत्थान करने मे विशेष योगदान देती है। पिछडी नारीयां समाज मे पिछडी रह जाती है वर्तमान मे नारीयां सभी सरकारी नौकरियों मे पुरुषों के बराबर सम्मान प्राप्त कर रही है। सभी विभागों मे नारी अपना योगदान दे रही है

BSER-16/2019

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

8. परिपत्र

राजस्थान सरकार
वित्त विभाबा, जयपुर

प-क्र. 11-7//क-7 दिनांक -05-03-2020

परिपत्र

समस्त प्रशासनिक अधिकारीयों को सूचित किया जाता है कि पिछले दो वर्षों में विभागीय सूचनाओं के आधार पर यह स्पष्ट हुआ है कि विभागों द्वारा निवेश अधिक किया गया है जिसकारण वित्त की कमी की सूचना सामने आई अतः सभी प्रशासनिक अधिकारी वित्त नियोजन की विधियो का अनुसरण करे।

समस्त प्रशासनिक अधिकारी

वित्त विभागाध्यक्ष
रमेश